॥ सत्यनाम ॥

॥ अथ श्री तीसा यन्त्र ॥
Ath Shree Teesaa Yantra

Table of Contents

Dohaa.....2
Indavan Chhand.....2
Saakhee 3
1. Jagaaiye Kyaa?.....3
2. Keejiye Kyaa ?.....3
3. Parakhiye Kyaa ?.....3
4. Leejiye Kyaa ?.....3
5. Kariye Kyaa ?.....4
6. Boliye Kyaa ?.....4
7. Hoeeye Kyaa ?.....4
8. Maaniye Kyaa ?.....4
9. Baraaiye Kyaa ?.....4
10. Khaaeeye Kyaa ?.....5
11. Raakhiye Kyaa ?.....5
12. Tyaagiye Kyaa ?.....5
13. Chhodiye Kyaa ?.....5
14. Paaiye Kyaa ?.....5
15. Dekhiye Kyaa ?.....6
16. Mitaaiye Kyaa ?.....6
17. Nirakhiye Kyaa ?.....6
18. Suniye Kyaa ?.....6
19. Saadhiye Kyaa ?.....6
20. Maariye Kyaa ?.....7
21. Deeje Kyaa ?.....7
22. Badaa Punya Kyaa ?.....7
23. Badaa Paap Kyaa ?.....7
24. Khushbui Kyaa ?.....7
25. Durgandh Kyaa ?.....8
26. Dhaariye Kyaa ?.....8
27. Thaharaaiye Kyaa ?.....8
28. Honee Kyaa ?.....8
29. Vichaariye Kyaa ?.....8
30. Tauliye Kyaa ?.....9
31. Sarvopari Kyaa ?.....9
Sawaiyaa 9

दोहा.....२
इन्दव छंद.....२
साखी.....३
जगाइये क्या ? ॥ १ ॥.....३
कीजिये क्या ? ॥ २ ॥.....३
परखिये क्या ? ॥ ३ ॥.....३
लीजिये क्या ? ॥ ४ ॥.....३
करिये क्या ? ॥ ५ ॥.....४
बोलिये क्या ? ॥ ६ ॥.....४
होईये क्या ? ॥ ७ ॥.....४
मानिये क्या ? ॥ ८ ॥.....४
बराइये क्या ? ॥ ९ ॥.....४
खाइये क्या ? ॥ १० ॥.....५
राखिये क्या ? ॥ ११ ॥.....५
त्यागिये क्या ? ॥ १२ ॥.....५
छोड़िये क्या ? ॥ १३ ॥.....५
पाइये क्या ? ॥ १४ ॥.....५
देखिये क्या ? ॥ १५ ॥.....६
मिटाइये क्या ? ॥ १६ ॥.....६
निरखिये क्या ? ॥ १७ ॥.....६
सुनिए क्या ? ॥ १८ ॥.....६
साधिये क्या ? ॥ १९ ॥.....६
मारिये क्या ? ॥ २० ॥.....७
दीजे क्या ? ॥ २१ ॥.....७
बड़ा पुण्य क्या ? ॥ २२ ॥.....७
बड़ा पाप क्या ? ॥ २३ ॥.....७
खुसबुइ क्या ? ॥ २४ ॥.....७
दुर्गन्ध क्या ? ॥ २५ ॥.....८
धारिये क्या ? ॥ २६ ॥.....८
ठहराइए क्या ? ॥ २७ ॥.....८
होनी क्या ? ॥ २८ ॥.....८
विचारिये क्या ? ॥ २९ ॥.....८
तौलिये क्या ? ॥ ३० ॥.....९
सर्वोपरी क्या ? ॥ ३१ ॥.....९
सवैया.....९

दोहा।
Dohaa

बन्दीछोर कबीर गुरु, धर्मदास शिष जासु।
तासु चरण बन्दन किये, होय अविद्य नासु ॥ १ ॥
Bandichhor Kabeer Guru, Dharmadaas Shish Jaasu;
Taasu Charan Bandan Kiye, Hoy Avidhya Naasu.

इन्दव छंद।
Indav Chhand

सोय रह्यो नित मोह निसा माँह, जानि परो नहिं राम पियारो।
जन्म अनेक गये सपनांतर, एकहु बार न जाग्रत धरो ॥ १ ॥
Soy Rahyo Nit Moh Nisaa Maanh, Jaani Paro Nahin Raam Piyaaro;
Janm Anej Gaye Sapanaantar, Ekahu Baar Na Jaagrat Dharo.

आदि गुरु तब देखि, तीसा यंत्र शब्द उचारो।
चारहु वेद पुराण अठारह, सोधि कह्यो यह तत्त विचारो ॥ २ ॥
Aadi Guru Tab Dekhi, Teesaa Yantra Shabd Uchaaro;
Chaarahu Ved Puraan Aththaarah, Sodhi Kahyo Yah Tatt Vichaaro.

साखी।
Saakhee

जीव किरतारथ कारने, भाषा कीन विचार।
तीसा जंतर बूझिके, नर उतरे भाव पार ॥ १ ॥
Jeeva Kiratarath Kaarane, Bhaashaa Keen Vichaar;
Teesaa Jantar Boojhike, Nar Utare Bhav Paar.

कलिमें जीवन अलप है, करिये बेगि सम्हार।
तप साधन नहिं हो सके, केवल नाम आधार ॥ २ ॥
Kalimen Jeevan Alap Hai, Kariye Begi Samhaar;
Tap Saadhan Nahin Ho Sake, Kewal Naam Aadhaar.

॥ अथ तीसा यंत्र प्रारम्भ ॥
Ath Teesaa Yantra Prarambh

साखी।
Saakhee

प्र० जगाइये क्या ?.....उ० प्रेम ।
Prashna: Jagaaiye Kyaa ?.....Uttar: Prem!

प्रेम जगावे विरह को, विरह जगावे पीव।
पीव जगावे जीव को, वही पीव वही जीव ॥ १ ॥
Prem Jagaawe Virah Ko, Virah Jagaawe Peev;
Peev Jagaawe Jeev Ko, Vahee Peev Vahee Jeev.

प्र० कीजिये क्या ?.....उ० पूजा ।
Prashna: Keejiye Kyaa ?.....Uttar: Poojaa!

पूजा गुरु की कीजिये, सब पूजा जेहि माहीं।
ज्यों जल सींचे मूलको, फूले फलै अघाहीं ॥ २ ॥
Poojaa Guru Kee Keejiye, Sab Poojaa Jehi Maahin;
Jyon Jal Seenche Mool Ko, Phoole Phalai Aghaaheen.

प्र० परखिये क्या ?.....उ० शब्द ।
Prashna: Parakhiye Kyaa ?.....Uttar: Shabd!

परखो द्वारा शब्दको, जो गुरु कहे विचार।
बिना शब्द कछु ना मिले, देखो नैन निहार॥ ३ ॥
Parakho Dwaaraa Shabd Ko, Jo Guru Kahe Vichaar;
Binaa Shabd Kachhu Maa Mile, Dekho Nain Nihaar.

प्र० लीजिये क्या ?.....उ० नाम ।
Prashna: Leejiye Kyaa ?.....Uttar: Naam !

नाम मिलावे रूपको, जो जन खोजी होय।
जब वह रूप हिरदे बसे, क्षुधा रहे ना कोय ॥ ४ ॥
Naam Milaawe Roop Ko, Jo Jan Khoje Hoy;
Jab Vah Roop Hirade Base, Kshudhaa Rahe Naa Koy.

प्र० करिये क्या ?.....उ० सत्संग।
Prashna: Kariye Kyaa ?.....Uttar: Satsang !

करिये नित सत्संग को, बाधा सकल मिटाय।
ऐसा अवसर ना मिले, दुर्लभ नर तन पाय ॥ ५ ॥
Kariye Nit Satsang Ko, Baadhaa Sakal Mitaay;
Aisaa Avasar Naa Mile, Durlabh Nar Tan Paay.

प्र० बोलिये क्या ?.....उ० मीठा ।
Prashna: Boliye Kyaa ?.....Uttar: Meethaa !

मीठा सबसे बोलिये, रस उपजे चहुँ ओर।
बसी कारन यह मंत्र है, तेजो बचन कठोर ॥ ६ ॥
Meethaa Sabase Boliye, Ras Upaje Chahun Or;
Basee Kaaran Yah Mantra Hai, Tejo Bachan Kathor.

प्र० होईये क्या ?.....उ० दास ।
Prashna: Hoeeye Kyaa ?.....Uttar: Daas !

होय रहै जब दास यह, तब सुख पावे अंत।
देखि रीति प्रहलाद की, सब में निरखो कंत ॥ ७ ॥
Hoy Rahai Jab Daas Yah, Tab Sukh Paave Ant;
Dekhi Reeti Prahlaad Kee, Sab Men Nirakho Kant.

प्र० मानिये क्या ?.....उ० सब को सत्य ।
Prashna: Maaniye Kyaa ?.....Uttar: Sab Ko Satya !

मानिये सब को सत्य है, जाको व्यवहार।
जियन मरत दोऊ लगा, थिर होय देखु विचार ॥ ८ ॥
Maaniye Sab Ko Satya Hai, Jaako Vyavhaar;
Jiyan Marat Dou Lagaa, Thir Hoy Dekhu Vichaar.

प्र० बराइये क्या ?.....उ० झगरा ।
Prashna: Baraaiye Kyaa ?.....Uttar: Jhagaraa!

झगरा नित्य बराइये। झगरा बुरी बलाय।
देख उपजे चिंता बढै, झगरा में घर जाय ॥ ९ ॥
Jhagaraa Nitya Baraaiye, Jhagaraa Buree Balaay;
Dekh Upaje Chintaa Badhai, Jhagaraa Men Ghar Jaay.

प्र० खाइये क्या ?.....उ० गम ।
Prashna: Khaaiye Kyaa ?.....Uttar: Gam !

गम सामान भोजन नहीं, जो कोइ गम को खाय।
अम्बारिष गम खाइये, दुर्वासा बिललाय ॥ १० ॥
Gam Saamaa Bhejan Naheen, Jo Koi Gam Ko Khaay;
Ambaarish Gam Khaaiye, Durlabh Bilalaay.

प्र० राखिये क्या ?.....उ० निज धर्म ।
Prashna: Raakhiye Kyaa ?.....Uttar: Nij Dharm!

राखिये निज निज धर्म को, दिढ गहिये सब काल।
निज धर्म आपन राखते, सहजे भये निहाल ॥ ११ ॥
Raakhiye Nij Nij Dharm Ko, Didh Gahiye Sab Kaal;
Nij Dharm Aapan Raakhate, Sahake Bhaye Nihaal.

प्र० त्यागिये क्या ?.....उ० सब कुछ ।
Prashna: Tyaagiye Kyaa ?.....Uttar: Sab Kuchh !

त्याग तो ऐसा कीजिये, सब कुछ एकहिं बार।
सब प्रभुका मेरा नहीं, निश्चय किया विचार ॥ १२ ॥
Tyaag To Aisaa Keejiye, Sab Kuchh Ekahin Baar;
Sab Prabhukaa Meraa Naheen, Nishchay Kiyaa Vichaar.

प्र० छोड़िये क्या ?.....उ० अभिमान ।
Prashna: Chhodiye Kyaa ?.....Uttar: Abhimaan !

छोड़ि झूठ अभिमान को, सुखी होय यह जीव।
भावै कोइ कछु कहै, हिये बसै निज पीव ॥ १३ ॥
Chhodi Jhooth Abhimaan Ko, Sukhee Hoy Yah Jeev;
Bhaavai Koi Kuchh Kahai, Hiye Basai Nij Peev.

प्र० पाइये क्या ?.....उ० सुख ।
Prashna: Paaiye Kyaa ?.....Uttar: Sukh !

सुख पाइये निज रूपमें, द्वेत भाव करि त्याग।
निरखो आपा सबमें, रहे न दुख को लाग ॥ १४ ॥
Sukh Paaiye Nij Roop Men, Dwet Bhaat Kari Tyaag;
Nirakho Aapaa Sab Men, Rahe Na Dukh Ko Laag.

प्र० देखिये क्या ?.....उ० आत्माराम ।
Prashna: Dekhiye Kyaa ?.....Uttar: Aatmaaraam !

देखै सबमें राम है, एकहि रस भरपूर।
ऊषहिते सब बनत है, चीनी शक्कर गूर ॥ १५ ॥
Dekhai Sab Men Raam Hai, Ekahi Ras Bharpoor;
Ooshahite Sab Banat Hai, Cheenee Shakkar Goor.

प्र० मिटाइये क्या ?.....उ० भ्रम ।
Prashna: Mitaaiye Kyaa ?.....Uttar: Bhram !

भरम मिटा तब जानिये, अचरज लगे न कोय।
यह लीला सब रामकी, निरखे आपा खाय ॥ १६ ॥
Bharam Mitaa Tab Jaaniye, Acharaj Lage Na Koy;
Yah Leelaa Sab Raam Kee, Nirakhe Aapaa Khaay.

प्र० निरखिये क्या ?.....उ० निजरूप ।
Prashna: Nirakhiye Kyaa ?.....Uttar: Nijaroop !

निरखत अपने रूपको, थीर होय सब अंग।
कहन सुनन कछु न रहे, ज्योंका त्योंही अभंग ॥ १७ ॥
Nirakhat Apane Roop Ko, Theer Hoy Sab Ang;
Kahan Sunan Kachhu Na Rahe, Jyon Kaa Tyonhee Abhang.

प्र० सुनिए क्या ?.....उ० गुणवार्ता ।
Prashna: Suniye Kyaa ?.....Uttar: Gunvaartaa !

सुनिये गुण की वार्ता, औगुन गुनिये नाहिं।
हंस चीरको गहत है, नीरस त्यागत आहि ॥ १८ ॥
Suniye Gun Kee Vaartaa, Augun Guniye Nahin;
Hans Cheer Ko Gahat Hai, Neeras Tyaagat Aahi.

प्र० साधिये क्या ?.....उ० इंद्री ।
Prashna: Saadhiye Kyaa ?.....Uttar: Indri !

साधे इंद्री प्रबलको, जिहिं ते उठे उपाध।
मन राजा बहकावते, पाँचो बड़े असाध ॥ १९ ॥
Saadhe Indra Prabal Ko, Jihin Te Uthe Upaadh;
Man Raajaa Bahakaavate, Paancho Bade Asaadh.

प्र० मारिये क्या ?.....उ० आशा ।
Prashna: Maariye Kyaa ?.....Uttar: Aashaa!

मारिये आशा साँपिनि, जिन डसिया संसार।
ताकि औषध तोष है, यह गुरु मन्त्र विचार ॥ २० ॥
Maariye Aashaa Saa~~m~~pini, Jin Dasiyaa Sansaar;
Taaki Aushadh Tosh Hai, Yah Guru Mantra Vichaar.

प्र० दीजे क्या ?.....उ० दान ।
Prashna: Deeje Kyaa ?.....Uttar: Daan !

भूखे को कछु दीजिये, यथा शक्ति जो होय।
ता ऊपर शीतल बचन, लखी आत्मा सोय ॥ २१ ॥
Bookhe Ko Kachhu Deejiye, Yathaa Shakti Jo Hoy;
Taa Oopar Sheetal Bachan, Lakhee Aatmaa Soy.

प्र० बड़ा पुण्य क्या ?.....उ० दया ।
Prashna: Ba~~d~~daa Punya Kyaa ?.....Uttar: Dayaa !

दया पुण्य सबसे बड़ा, सबके ऊपर भाख।
जीव दया चित्त राखिये, वेद पुराण है साख ॥ २२ ॥
Dayaa Pu~~n~~ya Sabase Ba~~d~~daa, Sabake Oopar Bhaakh;
Jeev Dayaa Chitt Raakhiye, Ved Puraa~~n~~ Hai Saakh.

प्र० बड़ा पाप क्या ?.....उ० हिंसा ।
Prashna: Ba~~d~~daa Paap Kyaa ?.....Uttar: Hinsaa !

बड़ा पाप हिंसा अहै, ता समान नहिं कोय।
लेखा मांगे धर्म जब, तब सब नौबत होय ॥ २३ ॥
Ba~~d~~daa Paap Hinsaa Ahai, Taa Samaan Nahin Koy;
Lekhaa Maange Dharm Jab, Tab Sab Naubat Hoy.

प्र० खुसबुइ क्या ?.....उ० यश ।
Prashna: Khushbui Kyaa ?.....Uttar: Yash !

खुशबुई यश की भली, फैल रही चहुँ ओर।
मल्या गिरी सम गंध है, प्रगट बसे जग सोर ॥ २४ ॥
Khushbuee Yash Kee Bhalee, Phail Rahee Chahu~~n~~ Or;
Malyaa Giri Sam Gandh Hai, Pragat Base Jag Sor.

प्र० दुर्गन्ध क्या ?.....उ० अपयश ।
Prashna: Durgandh Kyaa ?.....Uttar: Apayash !

अपयश सम दुर्गन्ध नहीं, नीका लेक न सोय।
जैसे मलके निकटमें, बैठ सके ना कोय ॥ २५ ॥
Apayash Sam Durgandh Naheen, Neekaa Lek Na Soy;
Jaise Mala Ke Nikat Men, Baith Sake Naa Koy.

प्र० धारिये क्या ?.....उ० धीरज ।
Prashna: Dhaariye Kyaa ?.....Uttar: Dheeraj !

धीरज धरी के जानिये, समुझी सबन की रीति।
उनकी औगुन आप में, कबहुँ न लइये मीति ॥ २६ ॥
Dheeraj Dharee Ke Jaaniye, Samujh Saban Kee Reeti;
Unakee Augun Aap Men, Kabahun Na Laiye Meeti.

प्र० ठहराइए क्या ?.....उ० मन ।
Prashna: Thaharaaiye Kyaa ?.....Uttar: Man !

मन ठहराये जानिये, अनसुझ सबै सुझाय।
ज्यों अंधियारे भवन में, दीपक बारी दिखाय ॥ २७ ॥
Man Thaharaaye Jaaniye, Anasujh Sabai Sujhaay;
Jyon Andhiyaare Bhavan Men, Deepak Baaree Dikhaay.

प्र० होनी क्या ?.....उ० होनहार ।
Prashna: Honee Kyaa ?.....Uttar: Honahaar !

होनी सोई होत है, होनहार जो होय।
रामचंद्र बन को गये, सुख आवत दुख जोय ॥ २८ ॥
Honee Soee Hot Hai, Honahaar Jo Hoy;
Raamchandra Ban Ko Gaye, Sukh Aawat Dukh Joy.

प्र० विचारिये क्या ?.....उ० निज तत्त्व ।
Prashna: Vichaariye Kyaa ?.....Uttar: Nij Tattva !

जो निज तत्त्व विचारिके, राखे हिये समोय।
सो प्रानी सुख को लहै, दुख नहीं दरसे कोय ॥ २९ ॥
Jo Nij Tattva Vichaari Ke, Raakhe Hiye Samoy;
So Praanee Sukh Ko Lahai, Dukh Naheen Darase Koy.

प्र० तौलिये क्या ?.....उ० बोली ।
Prashna: Tauliye Kyaa ?.....Uttar: Bolee !

बोली तो अनमोल है, जो कोइ बोले जान।
हिये निराजु तौलके, तब मुख बाहर आन ॥ ३० ॥
Bolee To Anamol Hai, Jo Koee Bole Jaan;
Hiye Niraaju Taul Ke, Tab Mukh Baahar Aan.

प्र० सर्वोपरी क्या ?.....उ० गुरुको दया ।
Prashna: Sarvopaaree Kyaa ?.....Uttar: Guru Ko Dayaa !

सर्वोपरि गुरु की दया, जो हारी भव खेद।
गुरु भगता सो जानई, और न पावै भेद ॥ ३१ ॥
Sarvopari Guru Kee Dayaa, Jo Haaree Bhav Khed;
Guru Bhagataa So Jaanaee, Aur Na Paavai Bhed.

सवैया।
Sawaiyaa

भाग जगे जब पूरबको तब, श्री गुरुदेव दया करि हेरि।
ज्ञान कपाट उधार दियो जब, मोह निशाके मारग फेरी ॥ १ ॥
Bhaag Jage Jab Poorabako Tab, Shree Gurudev Dayaa Kari Heri;
Gyaan Kapaat Udhaar Diyo Jab, Moh Nishaake Maarag Pheree.

थोरेइमें समझाय दियो तब, धीर भयी चंचल मति मेरी।
सूझ परो सबही घट साहब, छूटि गयी सब तुर्क घनेरी ॥ २ ॥
Thoreimen Samajhaay Diyo Tab, Dheer Bhayee Chanchal Mari Meree;
Soojh Paro Sabahee Ghat, Chhootee Gayee Sab Turk Ghaneree.